शिव को करके अर्पण, बनायें जीवन दर्पण

वर्तमान समय कलियुग का अंतिम चरण है। और ये सारा समय कालरात्रि अथवा महारात्रि ही है, जिस समय संसार को पावन और सुखी बनाने के लिए आत्माओं का आह्वान कर रहे हैं और प्रजापिता ब्रह्मा के तन द्वारा अत: उनकी आज्ञानुसार पवित्रता और शुद्धता का पालन कर हमें भी शिव पर अर्पण होकर संसार की सेवा करनी चाहिए। वास्तव में यही एक सच्चा पाशुपत व्रत है, जिसका फल मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति है। अब मनुष्य को चाहिए कि वो अपना नाता विकारों से तोड़कर परमात्मा शिव से जोड़े। शिवरात्रि एक दिन की नहीं है, बल्कि जब तक शिव परमात्मा इस अज्ञान रात्रि में अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं, ये सारा समय ही शिवरात्रि है। जिसमें कि मनुष्य आत्मा को ज्ञान द्वारा ही जागरण मनाना चाहिए। यही रीति शिवरात्रि का त्योहार मनाने की सच्ची रीति है।

समस्त संसार के नर-नारी अंधकार में डूबे हुए हैं। अब परमात्मा शिव अवतरित होकर ज्ञानामृत पिलाकर सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं।

शिव परमात्मा की वर्तमान में अति आवश्यकता

आज मानव इतिहास एक ऐसे महत्वपूर्ण मोड़ पर आ पहुँचा है जहाँ एक ओर उत्थान की अनंत सीमाएँ व सम्भावनाएँ हैं, वहीं दूसरी ओर समूल विनाश की पूर्ण तैयारी है। विज्ञान और तकनीकि की प्रगति दूषित मस्तिष्क वाले मानव के हाथ का खिलौना है। उसने मानव को ऐसे बारूद के ढ़ेर पर लाकर खड़ा कर दिया है कि किसी भी समय विस्फोट हो सकता है। मानव अपने मूल स्वभाव, शांति, प्रेम, आनंद से अपना सम्बन्ध तोड़ चुका है, और भौतिक साधनों के चंगुल में फँसकर मानसिक तनाव बढ़ाता जा रहा है। आत्महत्या, हृदयाघात से मृत्यु, दिनों दिन प्रदूषण की मात्रा बढ़ना, यहाँ तक कि अनिद्रा के कारण लोग गोलियाँ खाकर सो रहे हैं। इसका कारण है, मानव मन का प्रदूषण इतना बढ़ गया है कि वो बंद नहीं हो रहा है। तनाव हर क्षेत्र में इतना अति में है कि उसका कोई पारावार नहीं है। अनुशासन का हर जगह अभाव है। अब आप बताओ, उपरोक्त बातों से आपको क्या लगता है, क्या ये परमात्मा के आने का अनुकूल समय नहीं है जहाँ हर जगह हताशा और निराशा है, अकल्याण है! यही अवसर है अपने आपको उस परम शक्ति से जोड़कर सुख शांतिमय स्थिति प्राप्त करने का। समय बहुत थोड़ा है, इसलिए हे मानव जागो और उस कल्याणकारी शिव से नाता जोड़ो।

इस तरह होता परमात्मा शिव का अवतरण

ये विषय बड़ा ही गम्भीर है, लेकिन जानने योग्य है कि शिव को अजन्मा भी कहते हैं और मृत्युंजय भी कहते हैं। जिनका जन्म भी नहीं होता और जिन्होंने मृत्यु को जीत लिया है। वे सदा मुक्त हैं, कर्मातीत हैं, इसलिए वे किसी के वश में नहीं। लेकिन फिर भी वे सबको मुक्त करने के लिए मुक्तिदाता बनकर आते हैं।

शिव पुराण में एक कथन है कि संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव, ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट होते हैं और उनको रूद्र (कोटि रूद्र संहिता-शिव पुराण) नाम दिया जाता है तथा वे ब्रह्मा मुख से सृष्टि की रचना करते हैं। ये वाक्य शिव पुराण में कई बार उल्लिखित है कि परमात्मा शिव ब्रह्मा के द्वारा अवतरित होकर सतयुगी सृष्टि को रचते हैं। यदि शिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्य को पूर्ण रूपेण समझा जाए, तो विश्व परिवर्तन अति सहज हो सकता है। क्योंकि

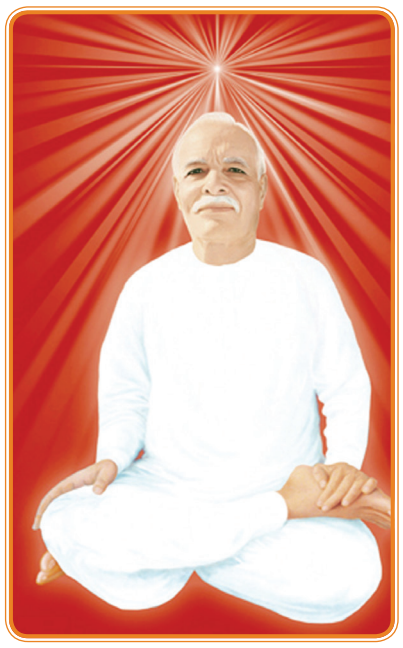

ये सिर्फ शैव सम्प्रदाय के भक्तों का पर्व नहीं, बल्कि पूरे विश्व के धर्म का एक पर्व है। कुछ उदाहरणों के द्वारा हम इसको देख सकते हैं, जैसे महाभारत में उल्लिखित एक वाक्य 'सबसे पहले जब सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी, तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वही नये युग की स्थापना के निमित्त बनी। उसने कुछ शब्द उच्चारे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया।'

इसी प्रकार मनुस्मृति में भी लिखा है कि 'सृष्टि के आरंभ में अण्ड प्रकट हुआ, जो ह. जारों सूर्यों के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था।' इसी प्रकार यहूदी, ईसाई व मुसलमानों के धर्म पुस्तक 'तोरेत' में भी इसी तरह सृष्टि का आरंभ माना जाता है कि ईश्वर की आत्मा पानी पर डोलती थी और आदि काल में परमात्मा ने आदम और हव्वा को बनाया, जिसके द्वारा स्वर्ग रचा।

इन अध्यात्म प्रेमियों का जीवन कुछ नया करने हेतु

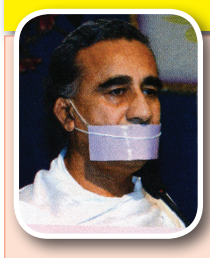

ब्रह्माकुमारी संस्था के संदेश को पूरे विश्व में जाना चाहिए। यहाँ से जो धारा बहेगी, जो तरंगें जाएंगी, ज़रूर जन-जन को आप्लावित करेंगी, शांति प्रदान करेंगी तथा आनंद से सराबोर करेंगी। यहाँ अलौकिकता है, आत्म-भाव है, मैत्री भाव है। ना तो कोई सूक्ष्म हिंसा ना स्थूल। यहाँ भेद नज़र नहीं आता, सब अभेद है। जिनके अंदर समर्पण भाव होगा, वही ब्रह्माकुमारी संस्था में आ सकते हैं। यही मेरा अनुभव है कि मुझे लगता है कि ब्रह्माण्ड में कुछ विशेष घटित होना है, बस थोड़ा समय बाकी रहा हुआ है कि जब इन अध्यात्म प्रेमियों का जीवन बनेगा प्रेरणा, श्रेष्ठ समाज के निर्माण के लिए। जैसे गोवर्धन पर्वत उठाने के लिए सबने अपनी अंगुली दी, वह अंगुली है इस अभियान में एक संकल्प में बंधने की।

-जैन मुनि अरविन्द कुमार,राजपुरा,पटियाला।

जी हाँ, हमने की है परमात्मा के स्वरुप की अनुभूति

मानवता व दिव्यता का प्रत्यक्ष रुप

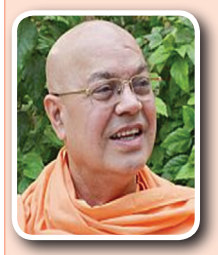

जिस प्रकार की यहाँ पवित्रता, प्रेम, मानवता तथा दिव्यता है, ऐसी हर घर में हो। मैं दादीजी सहित अनेक ब्रह्माकुमार भाई-बहनों से मिला, उनमें एक अनोखी अलौकिकता का अनुभव हुआ। शास्त्रों में जिन विकार रहित योगियों का वर्णन है वह इन सभी आत्माओं द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा है। मैं चाहूंगा कि हर घर में इनके जैसा ही स्वरूप हो, हर घर में ब्रह्माकुमारियों का ओजस हो। **-श्री स्वामी अध्यात्मानंद जी महाराज,अध्यक्ष, शिवानंद आश्रम, अहमदाबाद।**

अभी ही...परमात्म ज्ञान की आवश्यकता

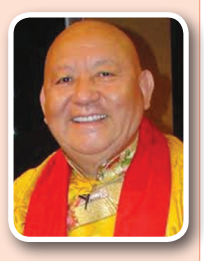

कलियुग को अज्ञान अंधकार का समय बताया गया है। जहाँ अंधकार है, वहीं तो सूर्य की रोशनी की हम कामना करते हैं। ऐसे समय पर वास्तव में ज्ञान सूर्य परमात्मा के दिव्य अवतरण की आवश्यकता पड़ती है। आज चारो ओर अज्ञान अंधकार के मध्य मानव का जीवन व्यतीत हो रहा है। लेकिन हमने इस संस्थान में देखा कि परमात्मा के ज्ञान द्वारा यहाँ मनुष्य स्वयं को रोशन कर रहा है। मुझे ये महसूस हो रहा है कि वास्तव में सिवाय परमात्मा के ये रोशनी कोई दे न सके। **-अंतर्राष्ट्रीय धर्मगुरू आचार्य तानपाई,नेपाल।**

ब्रह्माकुमारी संस्था करती सुसंस्कृत इंसान का निर्माण

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से आप सब लोग जो सेवा कर रहे हैं उस सेवा की कोई कीमत नहीं हो सकती है। ऐसी सेवा को मैं नमन करता हूँ। इतना बड़ा त्याग करना आसान नहीं है। यह तो परमात्मा शिव की कृपा हमारे ऊपर हुई जो हम उनके सानिध्य में आ गये वरना ये सबके भाग्य में नहीं है। उसके लिए प्रालब्ध होना चाहिए, हमारा पुण्य कर्म संचित है, तभी हमें परमात्मा शिव बाबा के पास आने का सौभाग्य मिलता है। ब्रह्माकुमारीज़ के विद्यालय तो बहुत हैं, देश में हैं, विदेश में हैं, कम विद्यालय नहीं हैं। उन सब विद्यालयों का एक ही उद्देश्य है सुसंस्कृत इंसान का निर्माण। हमने बहुत से लोगों का निर्माण किया है, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील बनाये, लेकिन जिस संस्कार की आवश्यकता थी वो हम नहीं दे पाये, लेकिन ये विद्यालय हर व्यक्ति चाहे वो कोई भी हो, उसे बिना अपेक्षाओं के सुसंस्कृत बनाने का कार्य कर रहा है।

- अन्ना हज़ारे,प्रसिद्ध समाजसेवी।